ओरण-देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल देवबणी–ओरण संरक्षण अभियान

अंक 34 जून 2025

ओरणों के संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान हेतु श्री अमन सिंह को 'मारवाड़ रत्न 2025' एवं कृपाविस को 'एलिनॉर ऑस्ट्रोम अवार्ड 2025'

ELINOR OSTROM AWARD

The Elinor Ostrom Award for Collective Governance of the Commons recognizes

KRAPAVIS

for its outstanding contribution to the **practice** of Commons' governance

Presented on 18th June 2025 at the XX Biennial IASC Conference

Kiran Singh, Committee Member | Tom Koontz, Committee Member | Divya Gupta, Committee Member

On behalf of the Award Committee of the Elinor Ostrom Award for Collective Governance of the Commons

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) के संस्थापक श्री अमन सिंह को 'मारवाड़ रत्न पुरस्कार 2025' से सम्मानित किये जाने की घोषणा 15 अप्रैल 2025 को की गई तथा यह पुरस्कार 8 अगस्त 2025 को दिया जाएगा। उन्हें मारवाड़ रत्न पुरस्कारों की श्रेणी में 'एच एच महाराजा उम्मेद सिंह ' पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। यह मारवाड़ रत्न पुरस्कारों में से एक है, जो मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा मारवाड़ की समृद्ध विरासत को सम्मानित करने के लिए दिए जाते हैं। महाराजा उम्मेद सिंह ने शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, वन, भू–राजस्व और पशुधन सहित कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकास कार्य करवाए। इसी कड़ी में, उनके नाम पर दिया जाने वाला यह पुरस्कार विशेष रूप से पर्यावरण और ओरण के संरक्षण में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करता है। श्री अमन सिंह के गत तीन दशकों से ओरण/देवबणियों एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयास, योगदान एवं कार्यों के लिए मारवाड़ रत्न पुरस्कार से सम्मान किया जाना तय हुआ है।

कृपाविस संस्थान को ओरण/देवबणियों के कार्यो और महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए 18 जून, 2025 को एमहर्स्ट, मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय, अमेरिका में 'एलिनॉर ऑस्ट्रोम अवार्ड, 2025' नामक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार को एलिनॉर ऑस्ट्रोम समिति सदस्य टॉम कून्ट्ज द्वारा कृपाविस टीम की सदस्य मेजर डॉ. निहारिका सिसोदिया ने प्राप्त किया। एलिनॉर ऑस्ट्रोम एक अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक महिला थी, जिन्हें आर्थिक शासन विशेषकर शामलात के विश्लेषण के लिए 2009 में 'नोबेल मेमोरियल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। वह यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला थी। इसी के तहत पुरस्कार से उन विद्वानों और प्रैक्टिशनर्स को सम्मानित किया जाता है, जो शामलात संसाधनों (जैसे–जल, जंगल व सामुदायिक भूमि) के स्थायी प्रबंधन और सामूहिक समस्याओं के समाधान करने के लिए नवीनतम संस्थागत समाधानों को समझने और बढ़ावा देने में उत्कृष्ट रहे व महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। यह पुरस्कार उन विद्वानों व संगठनों के आजीवन योगदान को सम्मानित करता है। यह पुरस्कार कृपाविस संस्थान को ओरणों के संरक्षण व संवर्धन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु उपर्युक्त सभी उल्लेखित कार्यों पर सफल व बेहतर कार्य प्रदर्शन हेतु प्रदान किया गया।

कृपाविस अलवर एक जमीनी स्तर पर कार्यरत संगठन है जो राजस्थान के थार मरूस्थल और अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में ओरण–देवबणियों (सामुदायिक संरक्षित क्षेत्र) के संरक्षण के लिए समर्पित है। तीन दशकों से अधिक समय से कृपाविस ने ओरण क्षेत्रों में पारिस्थितिकी बहाली, पुनरोत्थान और पारंपरिक जल प्रणालियों के नये निर्माण व पुनरोद्धार के माध्यम से स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाया है। कृपाविस ओरणों का दस्तावेजीकरण और मानचित्रण करने के लिए समदायों को एकजुट करता रहा है। ओरण समितियों के माध्यम से समावेशी शासन को बढ़ावा देकर और उच्चतम कानूनी स्तरो पर वकालत करके, ओरण विशेषज्ञ एवं पर्यावरणविद् श्री अमन सिंह ने ओरण/देवबणियों व रूंघो के सम्बन्ध में संरक्षण हेतु 2022 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय में दायर याचिका पर 18 दिसम्बर 2024 को एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसमें राजस्थान राज्य के वन विभाग को ओरणों, देवबणियों व रूंधो के विस्तृत ऑन–ग्राउंड और सैटेलाइट मैपिंग करने का निर्देश दिया गया और स्थानीय समुदायों के अधिकारों को सुरक्षित करने का आदेश भी पारित किया।

KRAPAVIS
कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)
कृपाविस ओरण प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध
काला कुँआ, अलवर-301001 (राज.)
ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com
सम्पादन : अमन सिंह व प्रतिभा सिसोदिया

थार मरुस्थल में गोचर भूमियों का पुनरोत्थानः ओरणों पर अत्यधिक चराई दबाव को कम करने एवं पारिस्थितिकी संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका

भारतीय थार मरुस्थल न केवल अपनी अत्यधिक विषम जलवायु पारिस्थितियों और विशिष्ट पारिस्थितिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्व है, बल्कि अपनी अद्भुत जैव विविधता के लिए भी जाना जाता है। यह दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल होने के नाते, मरुवासियों की आजीविका, संस्कृति और खाद्य सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपनी शुष्क प्रकृति के बावजूद, थार मरुस्थल भारत की कुछ सबसे संकटग्रस्त प्रजातियों का आवास है, जिनमें प्रख्यात गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) भी शामिल है, जो इसे संरक्षण प्रयासों के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाता है।

इस विषम पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण करने के लिए यह समझना आवश्यक है कि पर्यावरण, स्थानीय समुदायों, पशुधन और वन्यजीवों के बीच सह–अस्तित्व के लम्बे इतिहास ने एक जटिल परस्पर संबंध विकसित किया है। इस क्षेत्र की प्रमुख पारिस्थितिक संसाधनों में से एक है गोचर भूमि (सामुदायिक प्रबंधन वाले चरागाह), जो न केवल पशुधन को संबल प्रदान करती है, बल्कि वनस्पतियों और जीव–जंतुओं की समृद्ध विविधता का भी पोषण करती है। गोचर भूमि मौसमी आवास, चारा संसाधन, और जैव विविधता के भंडार के रूप में कार्य करते हुए मरूस्थल के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

थार मरूस्थल में गोचर भूमि की पारिस्थितिक भूमिकाओं के पूरक रूप में ओरण कार्य करते हैं, जो सामुदायिक संरक्षित क्षेत्र के रूप में जाने जाते हैं। स्थानीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में गहराई से रचे–बसे ये ओरण, मरूस्थल की पशुधन आधारिक अर्थव्यवस्था और सामाजिक–धार्मिक पहचान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। आध्यात्मिक महत्व के रूप में ही नहीं, ओरण अनेक पारिस्थितिक सेवाएँ भी प्रदान करते हैं: जैसे दुर्लभ, वनस्पति और जीव–जंतुओं की रक्षा के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण, पारंपरिक जल स्रोत आधारित जल संचयन और सूक्ष्म–जलवायु नियंत्रण, तथा सामुदायिक नेतृत्व में पुनरोत्थान, जिसमें स्थानीय संरक्षण प्रणाली और पारंपरिक नियमों के माध्यम से संसाधनों का सतत उपयोग और वन्यजीवों का आवास संरक्षण सुनिश्चित किया जाता है।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि गोचर भूमि और ओरण मिलकर एक विकेन्द्रीकृत, समुदाय–आधारित संरक्षण प्रणाली की रीढ़ बनाते हैं, जो न केवल थार मरुस्थल की अद्वितीय जैव विविधता की रक्षा करती है, बल्कि पृथ्वी के सबसे कठोर पर्यावरणों में से एक में जलवायु सहनशीलता और पारिस्थितिकीय स्थिरता को भी सुदृढ़ करती हैं।

हम यह भली भाँति जानते हैं कि हाल के दशकों में गोचर भूमि की उत्पादकता और पारिस्थितिकीय स्थिती में काफी गिरावट आई है। वनस्पतियों जैसे कि एकवर्षीय घासें एवं विभिन्न खरपतावारों का प्रभुत्व हो गया है, जबकि स्थानीय पोषक घासों और झाड़ियों में तेज गिरावट देखी गई है जिससे चराई के लिए इन भूमि की क्षमता बुरी तरह प्रभावित हुई है। इसके परिणामस्वरूप चराई का दबाव बड़े पैमाने पर ओरणों पर स्थानांतरित हो गय है, जहां अब अधस्तरीय वनस्पति, विशेष रूप से बहुवर्षीय घासों में चिंताजनक गिरावट देखी जा रही है, जो मृदा की स्थिरता और चारे की आपूर्ति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

सेवण और धामण जैसी प्रमुख स्थानीय घास प्रजातियाँ, जो पहले प्रचुर मात्रा में पाई जाती थीं, अब इन परिदृश्यों से लगभग समाप्त हो चुकी हैं। इसी प्रकार, गुग्गल जैसी महत्वपूर्ण झाड़ी प्रजातियाँ और रोहिड़ा जैसी वृक्ष प्रजातियाँ भी गोचर और ओरण दोनों क्षेत्रों में अत्यधिक चराई और आवास क्षरण के कारण गंभीर गिरावट का सामना कर रही हैं। वर्तमान में मरुस्थलीय क्षेत्र में कृपाविस के ओरण सर्वेक्षण के दौरान एक और समस्या सामने आयी है कि गोचर व ओरण भूमि में विलायती बबूल के फैलाव के साथ ही सोनामुखी भी फैलती जा रही है जोकि शाकीय प्रजातियों विशेषकर चारा घासों के लिए खतरा हो गया है, इस ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इन प्रवृत्तियों को पलटने और ओरणों पर निर्भरता को कम करने के लिए गोचर भूमि की उत्पादकता और पारिस्थितिक सहनशीलता को बढ़ाना अति आवश्यक है।

पश्चिमी राजस्थान में बड़ा क्षेत्र गोचर भूमि के अंतर्गत है। प्रायः सभी गावों में गोचर भूमि का प्रावधान है। उदाहरण के लिए जैसलमेर जिले में गोचर भूमि के अंतर्गत लगभग दो लाख पचास हजार हेक्टेयर क्षेत्र है, तथा ओरण में लगभग तीन लाख हेक्टेयर क्षेत्र है। इस परिदृश्य की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को वैज्ञानिक पुनर्स्थापन विधियों के साथ एकीकृत करना, सामुदायिक आधारित संचालन मॉडलों को समर्थन देना, और इन भू–दृश्यों को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के जीवित भंडार के रूप में मान्यता देना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण कार्य एक बहु–आयामी दृष्टिकोण के माध्यम से किया जा सकता है, जिसमें शामिल हैं: सेवण ओर धामण जैसी स्थानीय बहुवर्षीय और स्वादिष्ट घासों का पुनः बीजारोपण, तथा मृदा उर्वरता

बढ़ाने व पौष्टिक चारा प्रदान करने वाली दलहनी एवं शाकीय प्रजातियों का भी पुनः बीजारोपण की ओर ध्यान देना होगा। इसके साथ ही हमें स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल समुचित रूप में स्थानीय झाड़ियों व वृक्षों का रोपण करना होगा, जो शुष्क वातावरण में भी जीवित रह सकें और जैव विविधता को संबल प्रदान करें। ऐसे पुनरोत्थान प्रयासों को सामुदायिक नेतृत्व वाली संरक्षण योजनाओं और पारंपरिक ज्ञान के एकीकरण के साथ जोड़ा जाना चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय समुदाय की जरूरतें दोनों पूरा हों।

गोचर भूमि (सामुदायिक चरागाहों) का पुनरूद्धार और उनकी उत्पादकता को बढ़ाना न केवल ओरणों पर पारिस्थितिक दबाव को कम करेगा, बल्कि यह सतत पशुपालन, जैव विविधता संरक्षण और इस अद्वितीय मरूस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में जलवायु सहनशीलता को भी बढ़ावा देगा। विशेष रूप से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जब वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तेजी से स्पष्ट हो रहे हैं, यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि गोचर और ओरणों की पूरक भूमिकाओं का विश्लेषण किया जाए, ताकि पर्यावरणीय सहनशीलता को सशक्त किया जा सके, जैव विविधता संरक्षण को प्रोत्साहन मिले, और इस विशेष मरूस्थलीय भू–दृश्य में संसाधनों का सतत प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके। पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को आधुनिक संरक्षण पद्धतियों के साथ एकीकृत करने से इस समन्वय को और भी अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है, जिससे पारिस्थितिक और सामुदायिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन सुनिश्चित किया जा सके।

उपरोक्त कार्य के क्रियान्वयन में राज्य सरकार एवं गैर सरकारी संस्थाएं अपनी भूमिका निभा रही हैं। साथ ही पश्चिमी राजस्थान के जिलों में राज्य सरकार द्वारा पंचायत स्तर पर चरागाह विकास कार्य पर ध्यान केंद्रित किया है। लेकिन अतिमहत्वपूर्ण कार्य में हम सभी को अपने–अपने स्तर पर सार्थक योगदान देना होगा, जिससे इन अद्धितिय मरूस्थलीय गोचर एवं ओरणों को आने वाली पीढ़ी के लिए संरक्षित रख सकें।

–अमन सिंह एवं जे. पी. सिंह

रायड़ा ओरण की कहानी अमर सिंह की जुबानी

इस ओरण को गुंगिया माता की ओरण के नाम से जाना जाता है जो रायडा गाँव में स्थित है। इसकी ग्राम पंचायत खारा एवं तहसील व जिला फलोदी है। फलोदी से इस ओरण की दूरी लगभग 30 किलोमीटर है, ओरण का क्षेत्रफल 550 बीघा तथा गोचर भूमि के नाम पर 800 बीघा भूमि है तथा यहां की स्थलाकृति समतल है। यहां पर दो जुझार हुए इनमें से एक संगत सिंह भाटी थे जिन्होने गौ रक्षा व ओरण संरक्षण में अहम भुमिका निभाई। कृषि एवं पशुपालन यहाँ के समुदाय की आजीविका का मुख्य स्रोत है एवं ओरण क्षेत्र का स्वामित्त ग्राम पंचायत के अधीन है। ओरण क्षेत्र का स्वास्थ्य बेहतर है, बीच में कई स्थानों पर पेड़–पौधे कम है लेकिन अधिकतर स्थानों पर ये अच्छी स्थिति में हैं।

ओरण क्षेत्र में चार तालाब हैं जिसमें से दो तालाबों में 7 से 8 माह पानी भरा रहता है। इस क्षेत्र में भू–जल स्तर 400 फीट नीचे है तथा पेयजल का तालाब प्रमुख स्रोत हैं। ओरण में गाय, भैस, भेड़, बकरी, ऊंट घोड़े, गधे आदि चराई के लिए आते हैं, जो सभी देशी नस्ल के हैं और पूरे 12 महीने चराई के लिए ओरण पर निर्भर हैं। आसपास के जिन पशुपालकों के पास चराई क्षेत्र नहीं है वह लोग अपने पशुओं को यहाँ छोड़ देते हैं। साथ ही बाहरी पशुपालक भी आते हैं। घासों की बात करें तो यहां पर गठिया, कांटी, बेकर, सिनावड़ी, लोपड़ी, बूरड़ा घास प्रमुख हैं। विलुप्त घास प्रजातियों में से सेवण, धामण, धकड़ा आदि हैं और संकट ग्रस्त प्रजाति में खेजड़ी के पेड़ हैं। मुख्य रूप से इस ओरण क्षेत्र में कांटेदार पेड़–पौधे पाए जाते हैं, जिसमें बोरडी (बेर), कैर, जाल, खेजड़ी, नीम, देसी बबूल आदि प्रमुख हैं, मुख्य रूप से यहाँ पर बोरडी और कैर के पेड़ अधिक हैं तथा लघुवन उपज फल के रूप में लिया जाता है। औषधीय पौधों में रींगणी, सोनामुखी, साटा आदि प्रमुख हैं। साथ ही यहां पर शहद का भी संग्रह किया जाता है। महत्वपूर्ण झाड़ियों में से आक, सोनामुखी, मुराली, खींप आदि झाड़ियाँ हैं। यहाँ पर नए पौधों में सोनामुखी प्रमुख प्रजाति है।

ओरण क्षेत्र में विलायती बबूल काफी मात्रा में फैलती जा रही है तथा विलायती बबूल एवं सोनामुखी पौधे अपने नजदीकी किसी घास के पौधे को पनपने नहीं देते। यहाँ की मिट्‌टी का प्रकार दोमट, बलुई एवं पीली मिट्‌टी है। ओरण के पेड़–पौधे के पत्ते तथा पशुओं का गोबर वर्षा के पानी के साथ ओरण से खेतों में चला जाता है, जिससे कृषि पैदावार अच्छी होती है। ओरण में चारा अच्छा होने से जंगली पशु व नीलगाय आदि चरती हैं जिससे कृषि भूमि में कम नुकसान होता है। प्रमुख वन्यजीवों में हिरण, नीलगाय, सुअर, खरगोश, लोमड़ी, नेवला, गिलहरी, सर्प आदि है। ओरण में सर्प की प्रजाति विलुप्त हो रही हैं। स्थानीय पक्षियों में मोर, कबूतर, चिड़िया, गेरी, बाज, गिद्ध, कौआ, बगुला, पातेपड़ी, गोडावण और बाहरी पक्षियों में बाहरी कुरंजा प्रमुख रूप से शामिल हैं।

बुजुर्गों द्वारा बनाए गए नियम आज भी माने जाते हैं, जिसमें गीली लकड़ी ओरण से कोई नहीं काटते, केवल ओरण के परिक्षेत्र में ही मंदिर आदि एवं शमशान घाट पर समुदाय ओरण से लकड़ी का उपयोग कर सकते हैं। यहां पर ओरण क्षेत्र के विकास के लिए एक समिति बनी हुई है जो पौधें लगवाने एवं पशुओं के लिए पानी की व्यवस्था के साथ रखरखाव भी करती है और ग्रामवासी इसका सहयोग देते हैं। ओरण में कोई भी अपराध करने पर अपराधी के पकड़े जाने पर पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवा कर उसे दण्ड दिलवाने की कार्रवाई की जाती है। शिकार किए गए पशु को वन विभाग को सुपुर्द कर दिया जाता है। यहाँ पर मंदिरों के लिए प्रयोग क्षेत्र मात्र तीन बीघा है, जिसमें गुंगिया माता, कालका माता और संगत सिंह जुझार के मंदिर स्थित हैं। यहां पर मंदिरों में मेला हर माह की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को लगता है। जो समुदाय के आस्था से भी जुड़ा है और यह आस्था ओरण संरक्षण में भी सहायक है।

अमरसिंह
ग्राम– रायडा, जिला– फलोदी

ओरण–देवबणी जल संरक्षण अभियान: सीलीसेढ़ छीड़

सीलीसेढ़ झील अलवर शहर के समीप एक रमणीक स्थल है, जो अरावली पहाड़ियों के बीच स्थित है। इसके चारों तरफ बख्तपुरा, शौदानपुरा, पैतपुर, किशनपुर, रिंगसपुरी डोबा नामक गाँव बसे हुए हैं। सिलिसेढ़ झील का जलग्रहण क्षेत्र, जिसे स्थानीय रूप से सिलिसेढ़ छींड के नाम से जाना जाता है, जिसमें 20 से ज्यादा गांव/बस्तियाँ स्थित हैं। इन गांवों की कुल आबादी लगभग 7,000 है और पशुधन की आबादी लगभग 20,000 (जिसमें भैंस, मवेशी, बकरी, भेड़, और ऊँट) शामिल है, जो अपनी जल की जरूरतों के लिए इसी झील पर निर्भर हैं। इस झील से नहर द्वारा खेतों की सिंचाई के अलावा अलवर शहर को पानी की आपूर्ति होती रही है।

सीलीसेढ़ में गाद (जलबहाव से आने वाली रेत व मिट्टी का मिश्रण) के संग्रहण से उसकी गहराई में लगातार कमी होती जा रही है। झील के चारों तरफ की पहाड़ियाँ जो कभी हरी–भरी थीं, अब ज्यादातर नग्न हो चुकी हैं। झील के किनारे स्थित मानव बसावट, होटल व रेस्टोरेंट्स द्वारा इसमें सीधा कचरा विसर्जन होता है। यहाँ बसे गाँवों के लोग भी झील के उपयोग की मान–मर्यादा भूल गए हैं। इसकी जलग्रहण क्षेत्र की जमीन पर अतिक्रमण कर खेती करने व मकान बनाने लगे हैं।

अत: झील का अस्तित्व खतरे में है। जिस हेतु हम सभी को मिलकर कदम उठाने की अति आवश्यकता है:

- स्वयं झील की जलग्रहण क्षेत्र व नहर की जमीन पर अतिक्रमण करने व किसी भी तरह के प्रदूषण फैलाने में सहयोगी न बने।
- जल ग्रहण क्षेत्र में व समीपवर्ती पहाड़ियों पर पेड़ लगाएं तथा उनका संरक्षण करें। अपने गाँव के ओरण व देवबणियों का संरक्षण व संवर्धन करें।
- झील व वन संरक्षण कार्यों में लगी संस्थाओं से जुडें तथा स्वयं ऐसे संगठन बनाकर झील के संरक्षण के कार्य करें।
- झीलों व पर्यावरण के संरक्षण के लिए समर्पित एवं संकल्पित व्यक्ति को ही अपना जन प्रतिनिधि बनाएं।
- स्वैच्छिक व शिक्षण संस्थाएं श्रमदान करके झील की सफाई करने में सहयोग दें तथा झील के पर्यावरण तन्त्र का वैज्ञानिक अध्ययन करें।
- प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय अपने–अपने संस्थान में अलवर की झीलों के विकास हेतु कार्य करें।

साथ ही सरकार से अपेक्षा की जाती है कि: नहर व जलग्रहण क्षेत्र में हुए अतिक्रमण कानूनी रूप से हटवाए जाए। जल ग्रहण क्षेत्र का संरक्षण करके तथा पहाड़ियों पर वृक्षारोपण कार्य किया जा सकता है। प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कठोर व कानूनी कार्यवाही की जरूरत है। झील विकास प्राधिकरण की स्थापना तथा राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना की भी आवश्यकता है।

अलवरवासियों के अच्छे स्वास्थ्य का भविष्य स्वयं के हाथों में है जिसे व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर संकुचित मनोवृत्ति से ऊपर उठकर क्रियाशील होना होगा। स्वयं व आने वाली पीढ़ियों का जीवन खतरे में है। अत: झील संरक्षण व ओरण/देवबणियों (पवित्र उपवनों) के संरक्षण के कार्यों की शुरूआत करें। इसी उद्देश्य के तहत कृपाविस ने सरिस्का टाईगर रिजर्व के अन्तर्गत सिलीसेढ़ छींड के आसपास स्थित गांवों में अलग–अलग ओरण/देवबणियों में जल संरचनाओं के नये व पुनरोत्थान निर्माण कार्य वैज्ञानिक और पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके डीसीबी बैंक के वित्तीय सहयोग से किया जा रहा है। इसके अलावा परियोजना क्षेत्र के स्कूलों में ओरण–देवबणी जल संरक्षण अभियान प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं के माध्यम से स्कूली बच्चों के बीच जल संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदर्शनी लगाई जा रही है। संस्थान का दृष्टिकोण पारंपरिक जल संचयन संरचनाओं को बहाल करने, आधारभूत आकलन करने, युवाओं को शिक्षित करने और समुदाय के नेतृत्व वाले प्रबंधन ढांचे की स्थापना पर केंद्रित है।

पर्यावरण, स्वास्थ्य व साक्षरता।
रखें झील की भी स्वच्छता।।
स्वच्छ झील व सघन वानिकी।
तभी होगी अच्छी पारिस्थितिकी।।

कृपाविस टीम

राजस्थान के ओरण: सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप स्थिरता का एक जीवंत उदाहरण

राजस्थान के शुष्क भू–भाग के मध्य में सदियों पुरानी एक परंपरा है जहाँ स्थित पवित्र वन–उपवन, जिन्हें 'ओरण' के नाम से जाना जाता है। ओरणों को समुदायों द्वारा उनकी आध्यात्मिक और पारिस्थितिक महत्व के कारण संरक्षित किया जाता है। ये पवित्र वन भूमि अक्सर स्थानीय देवताओं या पैतृक जुझारों के नाम से जुड़ी होती हैं, इसलिए उन्होंने अनेक वर्षों तक इन ओरण क्षेत्रों को संरक्षित रखा है। ओरण सांस्कृतिक स्थलों और जीवंत उदाहरण दोनों के रूप में कार्य करते हैं कि समुदाय पर्यावरण की रक्षा कैसे कर सकते हैं।

ओरणों की अवधारणा इन पवित्र वनों के समुदायों के संयुक्त संरक्षण पर आधारित है। आधिकारिक नियमों और महंगी व्यवस्थाओं की आवश्यकता के बिना, स्थानीय लोग पुराने रीति–रिवाजों और साझा जिम्मेदारी का पालन करके इन उपवनों की देखभाल करते आ रहे हैं। इस मान्यता व दृढ़ परंपरा ने ऐसे प्राकृतिक वन क्षेत्र बनाने में मदद की है जो पर्यावरण की रक्षा करते हैं। ओरण जीवन के लिए महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी सेवाएँ प्रदान करते हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जो सूखे, कम उपजाऊ मिट्टी और जल की कमी से ग्रस्त हैं।

आज, दुनिया संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एस.डी.जी.) को प्राप्त करने की दिशा में काम कर रही है। पृथ्वी की रक्षा करने और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए 17 वैश्विक लक्ष्य बनाये गये हैं। इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, हमें आधुनिक और पारंपरिक दोनों ज्ञान की आवश्यकता है। ओरण एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि स्थानीय परंपराएं स्वाभाविक रूप से हमें इन लक्ष्यों की ओर बढ़ने में कैसे मदद कर सकती हैं।

ओरणों में घने पेड़ों का आवरण कार्बन गैस के प्रभाव से बचाने और आसपास के क्षेत्रों को ठंडा करने में मदद करता है, जिससे स्वाभाविक रूप से जलवायु परिवर्तन से लड़ा जा सकता है और इस प्रकार एस. डी. जी. 13: जलवायु कार्रवाई का समर्थन किया जा सकता है। ऐसे समय में जब बढ़ते तापमान और बदलते वर्षा पैटर्न राजस्थान सहित पूरे देश भर में जीवन के लिए खतरा बनता जा रहा है, ये उपवन प्रभावशाली जलवायु समाधान प्रदान करते हैं।

जल एक और प्रावधान सेवा है जो ओरण क्षेत्र प्रदान करते हैं। इन ओरण क्षेत्रों में से कई में पुराने जल भंडारण प्रणाली जैसे– जोहड़ (तालाब), टांका, बावड़ी, कुएं, बेरी, कुंड आदि हैं जो वर्षा जल एकत्र करते हैं और भू–जल स्तर को बढ़ाते हैं। यह बताता है कि आस–पास के गांवो में लंबी शुष्क अवधि के दौरान भी जल उपलब्धता ओरणों के माध्यम से हो सकती है, जो एस.डी.जी. 6: स्वच्छ पानी और स्वच्छता में योगदान देता है। इस तरह, ओरण सिखाते है कि जल भण्डारण का बुद्धिमानी से प्रबंधन कैसे किया जाए, जिससे आधुनिक पीढ़ी जूझ रही है।

ये पवित्र उपवन भूमि पर जीवन को भी संरक्षित करते हैं। खनन, कटाई और अत्यधिक चराई को दूर रखकर, ओरण उपजाऊ मिट्टी और प्राकृतिक वनस्पति को बनाए रखते हैं, जो सीधे एस.डी.जी. 15: भूमि पर जीवन का समर्थन करते हैं। विडंबना यह है कि बिना किसी आधिकारिक प्रबंधन योजनाओं के, ये सदियों पुराने ओरण वही काम करना जारी रखते हैं जो कई आधुनिक परियोजनाएं हासिल करने के लिए संघर्ष कर रही हैं जैसे – स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को जीवित और समृद्ध रखना।

लेकिन शायद ओरण द्वारा सिखाया गया सबसे बड़ा सबक यह है कि उन्हें किसी उन्नत तकनीक या बड़े बजट की आवश्यकता नहीं है। वे सामुदायिक भावना, सांस्कृतिक सम्मान और सरल ज्ञान पर पनपते हैं। जैसा कि जैसलमेर के एक बुजुर्ग ने कहा– ''जहाँ पाइप लाइनें विफल हो जाती हैं, वहां ओरण का कुआँ अभी भी काम कर रहा है।'' लेकिन आज ये पवित्र उपवन बढ़ते शहरों और भूमि अतिक्रमण से नए खतरों का सामना कर रहे हैं। सौभाग्य से, भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिये गये ऐतिहासिक फैसले और संगठनों द्वारा जमीनी स्तर पर मानचित्रण के प्रयास उनके संरक्षण के लिए आशा प्रदान करते हैं।

अंततः ओरण सिखाते हैं कि स्थिरता को हमेशा आविष्कार करने की आवश्यकता नहीं होती है, यह अक्सर हमारी परंपराओं के ज्ञान में निहित होती है, यदि हम वास्तव में एस.डी.जी. को प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं, तो ऐसी प्रथाओं की रक्षा करना कोई विकल्प नहीं, बल्कि हम सबकी एक जिम्मेदारी है।

–यशदीप गुप्ता
त्रिभुवन कॉलेज, नालन्दा युनिवर्सिटी

महिला सशक्तिकरण : आजीविका व्यवसायिक प्रशिक्षण

कृपाविस न केवल ओरण–देवबणी संरक्षण गतिविधियों में बल्कि ओरण क्षेत्र से जुड़े समुदाय की महिलाओं को ओरण जागरूकता के साथ उन्हें जीवन–यापन हेतु आधुनिक समय में चल रहे व्यवसायों से सम्बन्धित 4 माह की अवधि के महिला आजीविका व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन महिला सशक्तिकरण हेतु पिछले एक दशक से करता आ रहा है। इन प्रशिक्षणों में सिलाई कला, ब्यूटी पार्लर, आजीविका जागरूकता, डेयरी व्यवसाय, हस्तशिल्प कला (मिट्टी के बर्तन, लघु वन उपज, उपयोगी वस्तुएं) व साथ ही अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन, कृपाविस प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध, अलवर में नियमित रूप से संचालित होते आ रहे हैं। गत प्रशिक्षण दिसम्बर 2024 से मार्च 2025 तक की अवधि में सिलाई कला प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया, जिसमें लगभग 15 महिलाओं ने प्रशिक्षण में सक्रिय भाग लिया।

कृपाविस द्वारा दिए गए प्रशिक्षण में विशेषकर निम्न उद्देश्यों का ध्यान दिया जाता है जैसे– नवीनतम उपकरणों और तकनीकों का उपयोग, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सतत निगरानी व मूल्यांकन, महिलाओं को उनके उत्पादों और सेवाओं को बाजार के अवसरों से जोड़ना, सफल महिला उद्यमियों के साथ बातचीत व मार्गदर्शन के अवसर प्रदान करना, महिलाओं और उनके परिवारों को प्रशिक्षण के महत्व एवं अवसरों के बारे में जागरूक करना आदि, जिससे प्रशिक्षणार्थी महिलाओं को प्रेरणा मिल सके। साथ ही अनुभवी और योग्य प्रशिक्षकों को नियुक्त करना जो प्रभावी ढंग से ज्ञान और कौशल प्रदान कर सकें तथा सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक अभ्यास पर जोर दें।

आजीविका प्रशिक्षण महिलाओं को कौशल प्रदान करता है, यह आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें अपने जीवन के बारे में सही निर्णय लेने और अपने परिवारों में पूर्णतः भूमिका निभाने का आत्मविश्वास देती है। जब महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हैं, तो वे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं और निर्भरता से मुक्त हो सकती हैं, जब महिलाएं पारंपरिक रूप से पुरुषों के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में सफल होती हैं (प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त कौशल के कारण), तो यह समाज में महिलाओं की क्षमताओं और भूमिकाओं के बारे में रूढ़ियों और नकारात्मक धारणाओं को चुनौती देता है। प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य महत्वपूर्ण मामलों पर अपने विचार व्यक्त करने और उन्हें प्रभावित करने की शक्ति देते हैं, जिससे उनके आजीविका में सक्रियता आती है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं को अन्य महिलाओं और पेशेवरों से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं। सफल कामकाजी महिलाएं अपनी बेटियों और समुदाय की अन्य लड़कियों के लिए सशक्त रोल मॉडल के रूप में कार्य करती हैं। यह अगली पीढ़ी की महिलाओं की आकांक्षाओं और उनके आजीविका के बारे में उनकी धारणाओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। संक्षेप में, महिला आजीविका कार्यक्रम प्रशिक्षण महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है बल्कि उनके आत्मविश्वास, सामाजिक स्थिति, निर्णय लेने की क्षमता और व्यक्तिगत पहचान में भी सकारात्मक बदवाल लाता है, जिससे उनके पारंपरिक आजीविका को चुनौती मिलती है और वे अधिक स्वतंत्र और सशक्त जीवन जीती हैं। आजीविका प्रशिक्षण कार्यक्रम महिलाओं को अपना छोटा व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करते हैं। इसमें व्यवसाय योजना बनाना, विपणन और वित्तीय प्रबंधन जैसे पहलू शामिल होते हैं। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने और सफल होने से महिलाओं का आत्मविश्वास और समाज में आत्म–सम्मान बढ़ता है जिससे महिलाएं अपने समुदायों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा सकती हैं।

कृपाविस द्वारा ग्रामीण समुदायों की महिला मण्डल/समूहों का भी गठन निरन्तर किया जाता है। महिलााएं स्वयं सहायता समूहों का गठन करके सामूहिक रूप से व्यवसाय चला सकती हैं। वे प्रशिक्षण प्राप्त कर कौशल का उपयोग करके संयुक्त रूप से उत्पादन कर सकती हैं और हस्तशिल्प, सेवाओं या अन्य उत्पाद स्थानीय बाजारों, मेलों और ऑनलाइन भी अपने उत्पादों को बेचकर आय अर्जित कर सकती हैं। महिला आजीविका कार्यक्रम प्रशिक्षण न केवल महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है बल्कि उनके जीवन में स्थिरता और सुरक्षा लाता है, जिससे उनके और उनके परिवारों के लिए एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित होता है। इस प्रशिक्षण के लिए सहयोग रोहिणी निलेकणी फिलाथ्रोपीज संस्थान द्वारा प्रदान किया जा रहा है।

–मनीष कश्यप

कृपाविस द्वारा ओरणों के संरक्षण व प्रबंधन पर फलोदी में प्रशिक्षण कार्यशाला

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), अलवर द्वारा फलोदी शहर में ओरण संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु ओरण समुदायों की तीन दिवसीय (27 से 29 मई, 2025) प्रशिक्षण कार्यशाला का फॉउन्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी (एफ. ई. एस.) के सहयोग से आयोजन किया गया। जिसमें फलोदी व जैसलमेर जिलों के विभिन्न गांवो खारा, रायड़ा, सिहड़ा, बारू, बरमसर, ढढू, बामण, मण्डला खुर्द, कोलू, बधाउड़ा, भादरियाजी, टेपू जोधाणी, हनुमान नगर–भोजासर, शैतानसिंह नगर, बेंगटी, दिधू, आजसर, सोडाकोर आदि ओरण समुदायों तथा प्रशिक्षकों सहित लगभग 50 पुरूष व महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला के शुभारंभ के अवसर पर कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह ने ओरण–देवबणियों के परिचय के साथ इनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आजीविका व पर्यावरणीय महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में दायर अपनी याचिका पर ओरणों के हित में 18 दिसम्बर, 2024 को हुए ऐतिहासिक फैसले को ओरणों के संरक्षण व समुदाय के अधिकारों को सुनिश्चित करने का एक बहुत बड़ा कदम बताया। कृपाविस के सलाहकार एवं काजरी के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. जे. पी. सिंह ने ओरणों की जैव विविधता व समुदायों को मिलने वाली पारिस्थितिकीय सेवाओं तथा ओरणों हेतु नर्सरी, वृक्षारोपण, बीजारोपण, बहुवर्षीय चारा घास आदि विषयों में विस्तार से चर्चा की। ओरण संरक्षण हेतु विधिवत दस्तावेजीकरण व मानचित्रीकरण के ज्ञान से श्री मेहताब सिंह राठौड़, व्याख्याता व शोधकर्ता ने अवगत कराया। इस प्रशिक्षण के अति महत्वपूर्ण मुद्दे जिसमें वर्तमान परिदर्श्य में ओरणों पर खतरे, प्रबंधन, पुनरोत्थान तथा ग्रामीण आजीविका में ओरणों के महत्व, ग्राम स्तर पर ओरण संरक्षण व प्रबंधन विषय पर श्री अमन सिंह एवं डॉ. जे.पी. सिंह ने गहन प्रशिक्षण दिया। कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी के अध्यक्ष डॉ. किशन बैरवा ने कृषि एवं ओरणों के अंतर्सम्बंध, कम जल वाली फसल किस्में आदि विषयों पर अनुभव साझा किये।

कृपाविस के श्री मनीष कश्यप ने परंपरागत जल स्रोतों का पारंपरिक व आधुनिक तकनीक के मिश्रण से नये निर्माण व पुनरोत्थान, कृपाविस की ओरण–देवबणी जल संरक्षण अभियान जागरूकता प्रदर्शनी तथा कृपाविस द्वारा अपनायी नीति के अनुसार ओरणों के दस्तावेजीकरण प्रक्रिया, महत्वता एवं समुदायों की विशेष भागीदारी बारे में गहन अध्ययन प्रस्तुति दी। अगले सत्र में कृपाविस निदेशक श्रीमती प्रतिभा सिसोदिया की अध्यक्षता में विभिन्न ओरणों से आए संभागियों ने ओरण संरक्षण व संवर्धन पर अपने–अपने विचार व अनुभव व्यक्त किये। फॉउन्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी (एफ.ई.एस.) की टीम से श्रीमती सन्तोष, श्री मघाराम कडेला एवं श्री छताराम ने शामलात संसाधन प्रबंधन एवं शामलात अभियान पर विस्तृत जानकारी दी। ढढू गांव के श्री नारायण भारती व श्री गंगाराम ईशरवाल ने ओरण संरक्षण पर बदवाल लाने के लिए अपने गांव की ओरण से ही शुरूआत करने पर जोर दिया। रायड़ा गांव के श्री अमर सिंह अपने गांव की ओरणों पर जागरूकता व संरक्षण के लिए तत्पर दिखे। राजकीय महाविद्यालय, फलोदी के श्री प्रमोद कुमार थानवी ने फलोदी जिले के खारा व कोलू पाबूजी ओरणों के जलीय स्रोतों पर पूर्णतः निर्भर पक्षी प्रजातियों के अध्ययन के ज्ञान को सबके बीच साझा किया। टेपू गांव के पूर्व उप सरपंच श्री भंवर सिंह ने अपने गांव की ओरण की चर्चा करते हुए कहा कि उनके गांव की ओरण पर काफी अतिक्रमण है ऐसी समस्या केवल एक ओरण में नहीं बल्कि अनेक ओरणों की है तथा वह अपने गांव की ओरणों के प्रति कानूनी रूप से भी सक्रिय हैं।

कार्यशाला के अन्तिम दिवस में श्री गोपाल सिंह भाटी, संयोजक–इन्टेक फलौदी ने आधुनिक विकास की वर्तमान अवधारणा एवं ओरण संरक्षण (प्राकृतिक एवं अमूर्त विरासत) के संदर्भ में तथा जैव विविधता संरक्षण में महत्वपूर्ण जानकारी दी। श्री देवी सिंह भाटी ने पूर्वजों की ओरणरूपी अमूल्य धरोहर को संरक्षित रखने पर जोर दिया। कृपाविस के सर्वेक्षण टीम सदस्य श्री रामावतार शर्मा ने कृपाविस के ओरण सर्वे फॉर्मेट द्वारा ओरण से सम्बन्धित जानकारियाँ संग्रहित करने की प्रक्रिया के बारे में अवगत कराया। अगले सत्र में डॉ. जे. पी. सिंह ने आगामी ओरण प्रबंधन एवं क्षमता सृजन प्रशिक्षण सर्वे फॉर्म पर ओरणों के समुदाय सम्भागियों को गहन प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य, प्रशिक्षण में आए हुए संभागियों को अग्रणी रूप में ओरण यात्राओं, ओरण संरक्षण के प्रति लोगों की जिम्मेदारी व चेतना जागृत करने का काम करना है। सत्र के समापन के दौरान श्री अमन सिंह, श्रीमती प्रतिभा सिसोदिया व कृपाविस टीम ने समुदाय के सुनिश्चित अधिकारों की जानकारी, ओरणों का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबंधन जागरूकता आदि पर फलोदी के ओरण समुदायों के प्रतिनिधियों के साथ आगामी कार्ययोजना बनायी।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), ओरण प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
इस अंक के लिए सहयोग फॉउन्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी से प्राप्त ।
मुद्रक: जय बाबा प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर । संपादन सहयोग: मनीष कश्यप